**कार्स्ट स्थलाकृतियाँ**

कार्स्ट स्थलाकृतियाँ (Karst topography) सामान्यतः घुलनशील चट्टानों वाले क्षेत्रों में जल की क्रिया द्वारा बनी स्थलाकृतियाँ हैं। इनका नामकरण यूगोस्लाविया के कार्स्ट प्रदेश के आधार पर हुआ है जहाँ ये स्थलरूप बहुतायत से पाए जाते हैं। भारत में ऐसी स्थलाकृतियाँ रीवाँ के पठार, राँची पठार और चित्रकूट के पास पायी जाती हैं। गुप्तधाम कन्दरा एक ऐसी ही गुफा है जो कार्स्ट प्रक्रमों द्वारा निर्मित है। भारत में कार्स्ट स्थलाकृति का प्रभाव बस्तियों के बनने और उनके प्रतिरूप पर भी पड़ा है जैसे चूना पत्थर के क्षेत्रों में जल की क्रिया के कारण कार्स्ट स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।

कार्स्ट स्थलरूपों में कुछ प्रमुख हैं:

कन्दरा

कार्स्ट खिड़की

पोनार्स

आश्चुताश्म

निश्चुताश्म

गुहा स्तंभ

हेलिक्टाइट

निस्यन्दनाश्म

**कार्स्ट स्थलाकृतियाँ**

**अपरदनात्मक स्थलरुप**

**अवकूट –** अवकूट या लैपीज़ का निर्माण तब होता हैं जब कार्स्ट क्षेत्रों में जल के द्वारा घुलन क्रिया के कारण ऊपरी बाह्य सतह अत्यधिक ऊबड-खाबड एवं पतली शिखरिकाओं तथा संकरे गड्ढ़ों वाली हो जाती हैं। इनका निर्माण हो जाने के बाद चूना पत्थर की सतह इतनी असमान और नुकीली हो जाती हैं कि उस पर बिना जूतों के चलना बडा कठिन हो जाता हैं। इंग्लैण्ड में इसे क्लिंट तथा जर्मनी में कैरेल कहा जाता हैं।

• **टेरा रोसा – टेरा रोसा** एक प्रमुख भूमिगत जल कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं।

 • **घोल रन्ध्र-**

**घोल रंध्र** या **विलियन रंध्र** ([अंग्रेजी](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%9C%E0%A4%BC%E0%A5%80_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A4%BE): Sinkhole), भूमि के धंसने से जमीन पर बना एक गड्ढा, रंध्र या छेद है। यह ज्यादातर कार्स्ट प्रक्रियाओं के कारण बनते हैं- उदाहरण के लिए, कार्बोनेट चट्टानों के रासायनिक विघटन से।[[1]](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%98%E0%A5%8B%E0%A4%B2_%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%B0#cite_note-1) घोल रंध्रों का आकार व्यास और गहराई दोनों में 1 से लेकर 600 मीटर (3.3 से 2,000 फीट) तक हो सकता है। घोल रंध्र धीरे-धीरे या फिर अचानक बन सकते हैं, और ये दुनिया भर में पाए जाते हैं।

 • **विलयन छिद्र –** विलयन छिद्र एक प्रमुख भूमिगत जल कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं।

 • **धंसती निवेशिका-** धंसती निवेशिका एक प्रमुख भूमिगत जल कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं।

 • **राजकुण्ड -** राजकुण्ड एक प्रमुख भूमिगत जल कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं।

 • **घोल पटल-** घोल पटल एक प्रमुख भूमिगत जल कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं।

 • **कन्दरा –** कन्दरा एक प्रमुख भूमिगत जल कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं।

 **• कार्स्ट खिड़की**- **कार्स्ट खिड़की** अथवा **कार्स्ट फ़ेनस्टर** ([अंग्रेज़ी](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%9C%E0%A4%BC%E0%A5%80_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A4%BE): [Karst fenster](https://en.wikipedia.org/wiki/Karst_fenster%22%20%5Co%20%22en%3AKarst%20fenster)) [कार्स्ट](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%9F) क्षेत्रों में निर्मित होने वाला एक [स्थलरूप](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A4%B2%E0%A4%B0%E0%A5%82%E0%A4%AA) है। अन्तिम प्रौढावस्था मे जब कार्स्ट का विनाश होने लगता है तो कन्दराओं का कुछ भाग नीचे धँस जाता है जिससे **कार्स्ट खिड़की** का निर्माण होता है।

 • **कार्स्ट झील** –कार्स्ट झील एक प्रमुख भूमिगत जल कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं।

 • **पोनार्स-** ये लम्बवत चौडे मार्ग होते हैं जिनसे होकर छिद्रों अ सन्धियों का जल गुफाओं में प्रवेश करता हैं। [फ्रांस](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AB%E0%A4%BC%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%B8) मे इन्हे अवेन्स कहते हैं।

**निक्षेपात्मक स्थलरुप**

**आश्चुताश्म-**

[कन्दरा](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%BE) की छत से रिसता हुवा जल धीरे-धीरे टपकता रहता हैं। इस जल में अनेक पदार्थ घुले रहते हैं। अधिक ताप के कारण वाष्पीकरण होने पर जल सूखने लगता हैं तथा [कन्दरा](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%BE) की छत पर पदार्थों का निक्षेप होने लगता हैं। इस निक्षेप की आक्र्ति परले स्तंभ की तरह होती हैं जो छत से नीचे फर्श की ओर विकसित होते हैं।

 **निश्चुताश्म –** [कन्दरा](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%BE) की छत से टपकता हुआ जल फर्श पर धीरे-धीरे एकत्रित होता रहता है। इससे फर्श पर भी स्तंभ जैसी आकृति बनने लगती है। यह विकसित होकर छत की ओर बढ़ने लगती हैं।

  **गुहा स्तंभ-** कभी-कभी [आश्चुताश्म](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%9A%E0%A5%81%E0%A4%A4%E0%A4%BE%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE) तथा [निश्चुताश्म](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%9A%E0%A5%81%E0%A4%A4%E0%A4%BE%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE) एक दूसरे की ओर बड़ते हुए मिल जाते हैं तब एक स्तंभ की रचना होती हैं जिसे गुहा स्तंभ कहा जाता हैं।

  **हेलिक्टाइट-** ये भी स्तंभ जैसी आक्र्ति हैं किन्तु इनका निर्माण [जल](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A4%B2) की बूंदो द्वारा नही बल्कि आर्द्रतायुक्त सतह पर होता हैं। इसके निर्माण मे गुरुत्व का प्रभाव नही होता। इसका विकास किसी भी मे सम्भव हैं।

By
DR.Amar Kumar
Guest Faculty ,Geography Department
(CMJ College Donwarihat Khutauna
Madhubani LNMU Darbhanga)
Mob : - 8709640779